साईं
सृजन पटल
ई-न्यूज लैटर
लेखन और सृजन के उन्नयन के लिए सदैव प्रतिबद्ध

अंक-चतुर्थ नवम्बर-2024 पृष्ठ-16 निःशुल्क

दून के वरिष्ठ फिजिशियन डा.एस.डी.जोशी ने किया 'साईं सृजन पटल' के न्यूज लैटर का विमोचन

देहरादून। साईं कुटीर में आयोजित विमोचन कार्यक्रम में 'साई सृजन पटल' ई–न्यूज लैटर के तीसरे अंक का विमोचन दून चिकित्सालय से सेवानिवृत्त वरिष्ठ फिजिशियन डा. एस. डी. जोशी द्वारा किया गया। विमोचन के दौरान डा. जोशी ने इस अंक में शामिल विविध सामुदायिक पहलों और सांस्कृतिक विरासत की सराहना करते हुए इसे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बताया। संपादक डा. के. एल. तलवाड़ ने इस अवसर पर बताया कि यह अंक नवरात्रि, दशहरा और दीपावली जैसे प्रमुख त्योहारों की व्यस्तता के बावजूद प्रकाशित हुआ और इसे पाठकों से खूब सराहना मिली है। इस अंक में गढ़भोज दिवस पर झंगोरे की खीर की विशेष रेसिपी, बड़कोट महाविद्यालय की पूर्व छात्रा भारती आनंद की प्रेरणादायक कहानी, संदीप और यश की चित्रकारी, और निर्मल नर्सरी के बागवानी में उल्लेखनीय कार्य को भी प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त बड़कोट नगर पालिका का 'कबाड़ से जुगाड़' प्रयास, उत्तराखंडी हस्तकला को प्रोत्साहित करने के लिए रानीपोखरी के उत्तरा स्टेट एम्पोरियम, तथा पिरुल से बने सजावटी हस्तशिल्प के लिए मंजू आर. सिंह की प्रदर्शनी इस अंक की खासियत हैं।

डॉ. एस. डी. जोशी का निःशुल्क चिकित्सा शिविर, डा. अफरोज की निःशुल्क कोचिंग सेवा, यमुना घाटी की भवन निर्माण शैली और डा. एस. डी. तिवारी की प्राण वायु मुहिम जैसे पर्यावरण और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता को लेकर किए गए प्रयास भी प्रमुखता से प्रकाशित किए गए हैं। इस मौके पर न्यूज लैटर के सह संपादक अंकित तिवारी, नीलम तलवाड़, इनसाइडी क्रिएटिव मीडिया के सीईओ अक्षत तलवाड़ मौजूद रहे।

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि कर्णप्रयाग महाविद्यालय से प्राचार्य पद से सेवानिवृत्ति के उपरांत डा.के.एल.तलवाड़ ने अपने कार्यालय **'साई सृजन पटल'** की स्थापना की और अगस्त 2024 से इसी नाम से एक मासिक न्यूज लैटर का प्रकाशन प्रारंभ किया। **'साई सृजन पटल न्यूज लैटर'** के तीनों अंकों के अध्ययन का अवसर मुझे मिला। इन न्यूज लैटर्स में संकलित सामग्री अत्यंत रोचक व ज्ञानवर्धक भी है,जो डा.तलवाड़ की सृजनशीलता को प्रदर्शित भी करती है। डा.तलवाड़ की यह पहल उत्तराखंड राज्य के विभिन्न क्षेत्रों जैसे कला, लोक संस्कृति,विरासत,उत्सव, बागवानी एवं साहित्य सृजन आदि को बढ़ावा देने वाली है। विशेषकर दूरस्थ क्षेत्रों की प्रतिभाओं को भी आगे लाने के लिए यह सशक्त माध्यम बना है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि निकट भविष्य में **'साई सृजन पटल'** न्यूज लैटर उत्तराखंड की एक प्रतिष्ठित पत्रिका के रूप में अपनी विशेष पहचान बना लेगा। मैं **'साई सृजन पटल'** न्यूज लैटर के चतुर्थ अंक (नवंबर 2024) के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल व समस्त लेखकगणों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

डॉ.पी.पी.ध्यानी
पूर्व कुलपति, श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय

योग गुरू बाबा रामदेव जी ने पतंजलि वेलनेस हरिद्वार में 15 नवंबर को न्यूज लैटर के प्रकाशन हेतु दिया आशीर्वाद

सम्पादकीय

साईं सृजन पटल न्यूज लैटर का चतुर्थ अंक (नवंबर 2024) प्रबुद्ध पाठकों के अवलोकनार्थ प्रस्तुत है। जब न्यूज लैटर का प्रकाशन अगस्त 2024 से प्रारंभ किया गया था तो मन में एक डर भी था कि क्या यह न्यूज लैटर निरंतरता प्राप्त कर पायेगा ? सहयोगी लेखकगणों और सहृदय पाठकों के भरपूर सहयोग और स्नेह के चलते आज चतुर्थ अंक का ससमय प्रकाशन हो गया है। प्रयास रहा है कि अपने उत्तराखंड की उन प्रतिभाओं को भी, जिनके कार्य तो अत्यंत सराहनीय हैं,परन्तु यथोचित पहचान का अभाव रहा है,समाज के सम्मुख लाया जाये। इस अंक के प्रकाशन के लिए 15 नवंबर को पतंजलि वेलनेस हरिद्वार में योगगुरू बाबा रामदेव जी का आशीर्वाद भी मिला जिससे और अधिक उत्साहवर्धन हुआ। प्रस्तुत अंक में आदि बद्री,पांडुलिपियों के संग्रहण,छोलिया नृत्य,साहित्य सृजन,औखांण, रम्माण, पहाड़ी व्यंजन, सेब की बागवानी आदि के साथ–साथ ऐतिहासिक गौचर मेले पर भी सारगर्भित सामग्री का प्रकाशन हुआ है। प्रतिभाओं के रूप में प्रधानमंत्री जी से प्रशंसा प्राप्त कर चुके चित्रकार अनुराग रमोला, प्रो. मधु थपलियाल को महिला सशक्तीकरण पुरस्कार व छात्र शिवांश धीमान की गायन प्रतिभा को भी रेखांकित किया गया है। श्रीदेव सुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा.पी.पी.ध्यानी जी अपने संदेश में इस न्यूज लैटर का भविष्य एक प्रतिष्ठित पत्रिका के रूप में देखते हैं, जो हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। न्यूज लैटर प्रकाशन की निरंतरता बनाये रखने में सह संपादक अंकित तिवारी,प्रो.जानकी पंवार एवं कर्णप्रयाग महाविद्यालय के प्राध्यापकों का सराहनीय सहयोग सदैव नई ऊर्जा प्रदान करता रहता है।

आपका–डा. के.एल. तलवाड़

न्यूज लैटर में प्रकाशित लेखों में तथ्यों सम्बन्धी विचार लेखकों के निजी हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी कोष मुंबई से कर्णप्रयाग कालेज के तीस जरूरतमंद विद्यार्थियों को मिले दो–दो हजार रुपए

कर्णप्रयाग, 20 नवम्बर। राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष, मुंबई द्वारा एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के अंतर्गत महाविद्यालय में अध्ययनरत 30 जरूरतमंद छात्र–छात्राओं को शिक्षा सहायता के रूप में प्रत्येक को रु० 2,000 की धनराशि प्रदान की गई। कुल रु० 60,000 की इस सहायता ने विद्यार्थियों के शैक्षिक सफर को मजबूती प्रदान की।

कार्यक्रम में मित्तल चौरिटीज, मुंबई के ट्रस्टी श्री सुरेश मित्तल ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि शिक्षा ही वह माध्यम है, जो जीवन में ऊंचाइयों तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त करता है। विद्यार्थी अपने सपनों को साकार करने के लिए मेहनत करें और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहें।इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. वी. एन. खाली ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि यह शिक्षा सहायता न केवल विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में सहायक होगी, बल्कि उन्हें अपने भविष्य के प्रति और अधिक गंभीर एवं प्रतिबद्ध बनाएगी। उन्होंने श्री सुरेश मित्तल जी और मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता प्रकट की और कहा कि यह सहयोग निसंदेह विद्यार्थियों को आगे बढ़ने और अपने लक्ष्य प्राप्त करने में प्रेरित करेगा।कार्यक्रम में महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य प्रो. के. एल. तलवाड़ भी ऑनलाइन माध्यम से जुड़े । उन्होंने कहा कि ऐसी सहायता जरूरतमंद विद्यार्थियों के लिए मील का पत्थर साबित होती है और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है। समिति संयोजक डा. मदन लाल शर्मा ने मित्तल चौरिटीज का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि पिछले सत्र में जहां 15 विद्यार्थियों को रु० 30,000 की सहायता प्रदान की गई थी, वहीं इस बार यह राशि बढ़ाकर 30 विद्यार्थियों के लिए रु० 60,000 कर दी गई है। यह कोष शिक्षा क्षेत्र में एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करेगा । इस कार्यक्रम में मित्तल महिला महाविद्यालय, सरदारशहर, राजस्थान के प्राचार्य डॉ. मृत्युंजय पारीक ने भी ऑनलाइन माध्यम से शिरकत की और विद्यार्थियों को शिक्षा के महत्व को समझते हुए आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम का संचालन डा. कीर्तिराम डंगवाल ने कुशलतापूर्वक किया। इस अवसर पर डा. हिना नौटियाल, डॉ. स्वाति सुंदरियाल, डा. सुशील चंद्र सती, जे. एस. रावत, महाविद्यालय के समस्त प्राध्यापक, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे। महाविद्यालय परिवार ने मारवाड़ी अग्रवाल जातीय कोष के प्रति आभार प्रकट करते हुए इसे विद्यार्थियों के शैक्षिक उत्थान में एक सराहनीय योगदान बताया।

साहित्यकार

महावीर रवांल्टा: उत्तराखंड की लोक संस्कृति, साहित्य और पत्रकारिता की बहुमुखी प्रतिभा

महावीर रवांल्टा का नाम उत्तराखंड की लोक संस्कृति, साहित्य और पत्रकारिता में एक प्रमुख स्तंभ के रूप में सामने आता है। 10 मई 1966 को अविभाजित उत्तर प्रदेश के उत्तरकाशी जिले के सरनौल गाँव में जन्मे रवांल्टा ने बचपन से ही साहित्य, कला, और पत्रकारिता के क्षेत्र में गहरी रुचि दिखाई। रवाईं जौनपुर विकास युवा मंच की स्थापना कर उन्होंने उत्तरकाशी में अनेक रचनात्मक गतिविधियों का आयोजन किया, जिससे कई युवा प्रतिभाओं को पहली बार मंच मिला। इसके साथ ही, ऐतिहासिक तिलाड़ी कांड पर लिखे गए उनके नाटक मुनारबन्दी को माघ मेला मंच पर प्रस्तुत किया गया, जो उनके रचनात्मक कौशल और उनके क्षेत्रीय समाज के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

जनवरी 1989 में स्पेशल पुलिस फोर्स में नियुक्ति के बाद, रवांल्टा ने भारत–तिब्बत सीमा की सुदूर चौकियों में ढाई वर्ष बिताए। इसके बाद बुलन्दशहर (उ प्र) के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र धरपा एवं वैरा फिरोजपुर में अपनी सेवाएं देने के बाद नवंबर 2009 में उत्तराखण्ड लौटने पर उन्हीं दिनों से सुदूरवर्ती आराकोट के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

रवांल्टा का पत्रकारिता के प्रति समर्पण भी उल्लेखनीय रहा है। 'हिमालय और हम,' 'जन लहर,' 'उत्तरीय आवाज,' और 'मसूरी टाइम्स' जैसे पत्र–पत्रिकाओं से उनका सक्रिय जुड़ाव उन्हें एक प्रतिबद्ध पत्रकार के रूप में स्थापित करता है। उन्होंने उत्तरकाशी में कला दर्पण, रस चक्र साहित्य परिषद, युवा साहित्य कला संगमश जैसे संस्थानों से जुड़कर साहित्य और कला को नए आयाम दिए।

उनकी लेखनी में उपन्यास, कहानी संग्रह, लघुकथा संग्रह, नाटक, कविता संग्रह, बाल साहित्य, व्यंग्य संग्रह, लोक साहित्य, और अनुवाद जैसे विभिन्न विधाओं का समावेश है। उनकी कई रचनाएँ आकाशवाणी और दूरदर्शन पर प्रसारित हुई और उनके कार्यों पर आधारित कई ऑडियो–वीडियो, लघु फिल्में और नाटकों का मंचन हुआ है। रवांल्टा को राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। उनकी कहानियाँ जैसे अवरोहण, सच के आर पार, और बाल नाटक पोखू का घमण्ड ने अखिल भारतीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है। उनके कार्यों पर कई शोध भी किए गए हैं, जो उनके कृतित्व की गहराई और विविधता को दर्शाते हैं। महावीर रवांल्टा का योगदान न केवल साहित्य और पत्रकारिता तक सीमित है, बल्कि उन्होंने लोकसंस्कृति, बाल साहित्य, और रंगकर्म में भी अद्वितीय योगदान दिया है। उनका जीवन और कार्य क्षेत्रीय साहित्य, कला और संस्कृति के संवर्धन और प्रसार में प्रेरणा का स्रोत है।

प्रस्तुति: प्रो.(डा.)के.एल.तलवाड़

कुछ अलग

पांडुलिपियों, डाक टिकटों, प्राचीन सिक्कों और विभिन्न देशों की करेंसी के संग्रहणकर्ता हैं कृष्णा नंद पंत

वर्तमान युग में जहां आधुनिकता और प्रौद्योगिकी का बोलबाला है, वहीं कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हमारी सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन ज्ञान को संजोने में लगे हुए हैं। इनमें से एक नाम है श्री कृष्णानंद पंत का, जो श्री बद्रीनाथ–केदारनाथ मंदिर समिति द्वारा संचालित संस्कृत महाविद्यालयों के श्री अनंत अम्बानी पुस्तकालय में पुस्तकालय समन्वयक और वेद अध्यापक के रूप में कार्यरत हैं। अपने जीवन को वेद, पुराण, विज्ञान, और संस्कृति के प्रति समर्पित करते हुए, पंत जी ने प्राचीन भारतीय ज्ञान और धरोहर को संरक्षित करने का अद्वितीय कार्य किया है।

श्री पंत का जोशीमठ में जन्म हुआ और वे अपने पिता श्री अनसूया प्रसाद पंत के ज्येष्ठ पुत्र हैं। बचपन से ही संस्कृति और धरोहर के प्रति उनकी रुचि को देखते हुए उन्होंने प्राचीन ग्रंथों और पांडुलिपियों का संकलन प्रारंभ किया। वे 14 बद्री–केदार ग्रंथ मालाओं के संकलनकर्ता हैं और उनके पास 1000 से अधिक पांडुलिपियाँ संग्रहित हैं। इसके अलावा, उन्होंने 10,000 से अधिक सिक्कों और डाक टिकटों का भी संग्रह किया है, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता और ऐतिहासिक परंपराओं का दर्पण प्रस्तुत करते हैं। पंत जी का मानना है कि हमारे घरों में अनेक पुरानी पांडुलिपियाँ, डाक टिकट, और प्राचीन दस्तावेज संजोए हुए हैं, जिनकी उपयोगिता हमारे जीवन में प्रेरणा और संस्कृति के संरक्षण में हो सकती है। वे मानते हैं कि यह धरोहर आने वाली पीढ़ियों के लिए सीख और प्रेरणा का स्त्रोत बन सकती है, जिससे हमारा समाज अपनी संस्कृति और इतिहास को समझ सके और उसे संरक्षित रखने का महत्व जान सके।

इस सफर में पंत जी ने अनगिनत विद्वानों, साधु–संतों और संस्थाओं के साथ मिलकर सहयोग लिया। इस धरोहर की खोज के लिए उन्होंने कई बार रोजाना 5 से 10 किलोमीटर तक की यात्रा भी की। इस जुनून का एक विशेष मोड़ उस समय आया, जब वे ऋषिकेश के राम झूला क्षेत्र में एक सिक्का संग्रहकर्ता से मिले। उस संग्रहकर्ता से प्रेरणा पाकर, पंत जी ने इस कार्य को अपनी जिंदगी का ध्येय बना लिया।

श्री पंत का योगदान न केवल संस्कृत महाविद्यालयों के छात्रों के लिए अद्वितीय है, बल्कि वे भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा का एक स्रोत भी हैं। उनकी यह यात्रा मात्र एक संग्रहण नहीं है। यह एक परंपरा को संजोने और भविष्य में सजीव रखने का महान कार्य है। आज के समाज में ऐसे लोगों की कमी नहीं है, जो हमारे इतिहास और धरोहर की महत्ता को समझें और उनके

संरक्षण के प्रति गंभीर हों। श्री कृष्णानंद पंत जैसे लोग हमें याद दिलाते हैं कि हमारी प्राचीन धरोहर केवल भूतकाल की यादें नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं की कुंजी भी हैं। श्री पंत का यह कार्य प्रेरणास्पद है और हमें यह संदेश देता है कि अपनी विरासत और संस्कृति को संजोने का दायित्व हम सभी पर है।

हमारी प्राचीन संस्कृति, ज्ञान, और साहित्य को सुरक्षित रखने में पांडुलिपियों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। आज भी इन पांडुलिपियों का अस्तित्व पंत जैसे समर्पित व्यक्तियों की अथक मेहनत, लगन और अदम्य संकल्प का परिणाम है। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपनी निजी स्वार्थों को त्यागकर, पुरातन ज्ञान को सहेजने का कार्य किया है। संस्कृत, विज्ञान, कला, और इतिहास की ये अमूल्य पांडुलिपियाँ आज भी हमारे पास सुरक्षित हैं क्योंकि कुछ लोग अपने जीवन को इस धरोहर के संरक्षण में समर्पित किए हुए हैं। पंत जैसे लोग समाज के वास्तविक नायक हैं जो नई पीढ़ी को उनके गौरवमयी अतीत से जोड़ने के साथ–साथ उन्हें अपनी सांस्कृतिक जड़ों की पहचान करा रहे हैं। इन लोगों का प्रयास एक ऐसा स्तंभ है जिस पर हमारी सांस्कृतिक धरोहर का भविष्य टिका है।

प्रस्तुति–अंकित तिवारी
सह सम्पादक

"औखांण" डॉ0 अन्थवाल का यह प्रयास हमें अपनी जड़ों से जोड़ता है

डॉ0 वेणीराम अन्थवाल
रचयिता
'उत्तराखण्ड के लोक-जीवन' की समृद्ध परम्परा 'औखांण'
(एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स से पुरस्कृत पुस्तक)

- **बान्द्रा मुण्ड म बल ट्वपली नि स्वांदी**
  (बन्दर के सर पर टोपी अच्छी नहीं लगती) अर्थात अनावश्यक वस्तु प्राप्त होना या योग्यता के अनुसार कार्य मिलना ही अच्छा होता है।
- **जख बल नाक तख स्वनु नींन,अर जख स्वनु तख बल नाक नींन**
  (जहां नाक है वहां सोना नहीं और जहां सोना है वहां नाक नहीं है) अर्थात इच्छित व्यक्ति के पास इच्छित वस्तु न होना।
- **जु बल घड़ि बची सु घड़्याक बची**
  (जो एक पल बच गया वह अधिक समय तक बच सकता है) अर्थात जो सतर्क रहता है,उसे हानि नहीं उठानी पड़ती।
- **कबि बल घी घड़ा अर कबि बल मुठी चणा**
  (कभी तो घी मिलता है और कभी मुट्ठी भर चने) अर्थात समय एक जैसा नहीं रहता,सुख–दुःख आते–जाते रहते हैं।

विरासत

छोलिया नृत्यः उत्तराखंड की वीरता और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक

छोलिया नृत्य उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसे 'युद्ध नृत्य' के रूप में भी जाना जाता है। इस नृत्य की उत्पत्ति कुमाऊं क्षेत्र में मानी जाती है और इसका संबंध ऐतिहासिक सैन्य परंपराओं से है। छोलिया नृत्य का प्रदर्शन विशेष रूप से विवाह और सांस्कृतिक आयोजनों में किया जाता है, जहां यह वीरता, साहस और समर्पण की भावना का प्रतीक बनता है।

छोलिया नृत्य में परंपरागत वेशभूषा और हथियारों का उपयोग इसे एक अनोखी और दर्शनीय कला बनाता है। नर्तक रंगीन वेशभूषा में ढोल-दमाऊ की धुन पर तलवारों के साथ नृत्य करते हैं, जो उनके युद्ध कौशल और सामूहिक शक्ति का प्रदर्शन है। यह नृत्य न केवल लोगों में उत्साह का संचार करता है, बल्कि हमारी संस्कृति और परंपराओं के प्रति गर्व भी पैदा करता है। छोलिया नृत्य का ऐतिहासिक महत्व भी बहुत गहरा है। कहा जाता है कि यह नृत्य उन समयों का प्रतीक है जब योद्धा युद्ध पर जाने से पहले इस प्रकार से नृत्य कर अपनी विजय की कामना करते थे।

वर्तमान समय में, छोलिया नृत्य ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी ख्याति प्राप्त की है, जहां इसे उत्तराखंड की वीरता और सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक माना जाता है। छोलिया नृत्य के संरक्षण की दिशा में कई प्रयास किए जा रहे हैं। राज्य सरकार और सांस्कृतिक संगठनों द्वारा छोलिया नृत्य के विकास और प्रसार के लिए कार्यशालाओं और प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इसके साथ ही युवा पीढ़ी को इस नृत्य के प्रति जागरूक करने के लिए स्कूलों और कॉलेजों में भी इसका प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। छोलिया नृत्य केवल एक नृत्य नहीं, बल्कि यह हमारी जड़ों से जुड़ने और अपने गौरवशाली अतीत को याद करने का एक माध्यम है।

इसे जीवंत रखने के लिए हमें इसे पीढ़ी दर पीढ़ी सहेजकर रखना होगा। उत्तराखंड के लोकजीवन में इस नृत्य का महत्व केवल एक सांस्कृतिक विरासत तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे सामूहिक साहस, जोश और संस्कृति का प्रतीक है। छोलिया नृत्य वास्तव में उत्तराखंड की अनमोल धरोहर है, और इसे संजोकर रखना हम सभी का कर्तव्य है।

प्रस्तुति-अंकित तिवारी, सह सम्पादक

रम्माण एक पौराणिक विरासत

अपनी विशिष्ट संस्कृति, मेले और समृद्ध लोक कला और लोक शैली के लिए उत्तराखण्ड जाना जाता है। दशहरा पर्व आते–आते सम्पूर्ण उत्तराखण्ड रामलीला और लोकमेलों से पट जाता है। 1943 से प्रारम्भ हुए ऐसे ही लोकसंस्कृति और सामाजिक आर्थिक मेले के रूप में विख्यात है गौचर मेला। 14 नवम्बर से 20 नवम्बर 2024 तक आयोजित होने वाले 72वें राजकीय औद्योगिक विकास एवं सांस्कृतिक गौचर मेले में इस बार उत्तराखण्ड की एक विशेष लोक कला प्रदर्शित की गई जिसे "रम्माण" कहा जाता है। देवभूमि उत्तराखण्ड के अलग–अलग स्थानों पर स्थानीय पारम्परिक शैली में रामायण का मंचन वर्षों से होता आ रहा है। इसी प्रकार का आयोजन चमोली जनपद के ज्योतिर्मठ तहसील के कई गांवों में होता है परन्तु मूल रूप से पैनखण्डा के सलूड़–डुंग्रा गांव में प्रत्येक साल अप्रैल माह में रम्माण उत्सव का आयोजन किया जाता है। यह रामायण की मूल कथा पर ही आधारित है।

रम्माण रामायण का ही अपभ्रंश शब्द है। स्थानीय गढ़वाली लोक भाषा में भी रामायण को रम्माण कहा जाता है। रम्माण की अपनी विशिष्ट पारम्परिक शैली के कारण इस उत्सव को यूनेस्को द्वारा वर्ष 2009 में राष्ट्रीय धरोहर घोषित किया गया है। एक पखवाड़े तक चलने वाला यह उत्सव कभी 11 दिन तथा कभी 13 दिन तक आयोजित किया जाता है। इस उत्सव में रामायण के कुछ चुने हुए प्रसंगों को पात्रों द्वारा स्थानीय लोक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इन पात्रों में राम, लक्ष्मण, सीता, हनुमान प्रमुख होते हैं जो 18 मुखौटे, 18 ताल, 12 ढोल, 12 दमाऊँ तथा 8 भंकोरों की थाप पर नाचते हैं। रम्माण का मुख्य आकर्षण सुनहरे रंगीन मुखौटे होते हैं जो शहतूत (केमू) की लकड़ी के बनें होते हैं और इन्हें पत्तर कहा जाता है। इस मेले में रामजन्म, रामवनवास, सुनहरे हिरण वध, सीता हरण, हनुमान मिलन, लंकादहन, राजतिलक आदि प्रमुख प्रसंगों का मंचन किया जाता है इसके अलावा बीच–बीच में लोगों के हास्य मनोरंजन के लिए कुछ हास्य चित्रण भी किये जाते हैं जिनमें कुरू जोगी, बण्यां–बण्यांण, म्योर–मुरैंण, माल नृत्य, ख्यालरी, सूरज ईश्वर नृत्य, राणी–राधिका नृत्य, पाण्डव नृत्य, बुढ़देवा नृत्य आदि।

रम्माण उत्सव के अन्त में स्थानीय ईष्ट देवता भूम्याल तथा क्षेत्रपाल प्रकट होते हैं तथा सभी को आशीर्वाद देते हुए किसी एक परिवार विशेष के घर विदाई लेने के लिए जाते हैं। भूम्याल की पूजा पाठ के उपरान्त ही इस पारम्परिक रम्माण मेले का समापन होता है। पौराणिक मान्यता है कि मध्यकाल में जब सनातन धर्म की मान्यता व प्रभाव क्षीण होने लगा तब शंकराचार्य ने सनातन को प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से देश के चार कोनों में चार मठों की स्थापना की। शकराचार्य जी के इस कार्य से ही प्रभावित होकर उनके शिष्यों ने सनातन को और प्रभावशाली बनाने के लिए स्थानीय लोक शैली को इसमें जोड़ा और यही विचार रम्माण के रूप में दिखता है।

कीर्तिराम डंगवाल
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
डॉ. शिवानन्द नौटियाल राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग, चमोली।

धरोहर

कुमाऊं की अनुष्ठानिक लोक कला 'ऐपण' को संजो रहीं शाम्भवी और वैष्णवी लोहनी

आज जहां दीपावली पर्व पर अधिकांश घरों में सजावट के लिए लिए बाजार से ही रेडीमेड वस्तुओं(अधिकतर चाइनीज माल) लाने को प्राथमिकता दी जा रही है वहीं, देहरादून के आर.के.पुरम निवासी दो बेटियों वैष्णवी और साम्भवी ने इस पर्व पर ऐपण बनाकर पारंपरिक लोक कला के माध्यम से मां लक्ष्मी का आह्वान किया है। उनकी यह कलाकारी देखते ही बनती है। आइये जानते हैं कि ऐपण क्या है और इसे कैसे बनाया जाता है ! ऐपण शब्द संस्कृत से आया है जिसका अर्थ है लेप करना।

ऐपण कुमाऊं की एक स्थापित अनुष्ठानवादी लोककला है। यह कला मुख्य रूप से त्योहार या शादियों के दौरान घरों,दीवारों,फर्श या पूजा स्थल के प्रवेश द्वारों पर बनाया जाता

है। ऐपण एक चिकनी सतह पर बनाया जाता है,जिसे गीली मिट्टी से तैयार किया जाता है,जिसे गेरू के नाम से जाना जाता है,जो लाल रंग का होता है। पके हुए चावलों को पानी के साथ पीसकर एक पेस्ट बनाया जाता है,जिसे बिस्वार कहा जाता है। महिलाएं पैटर्न बनाने के लिए अपनी तर्जनी, अनामिका और मध्यमा का इस्तेमाल करती हैं। हालांकि नई पीढ़ी ऐपण बनाने के वाटर कलर और ब्रश का इस्तेमाल भी करने लगी हैं। उत्तराखंड ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट दिसंबर 2023 में देहरादून व आसपास के क्षेत्र में दुकानों और प्रतिष्ठानों के स्वरूप में

एकरूपता लाने लिए राज्य सरकार द्वारा बनाये गये साइनबोर्ड्स के बार्डर में ऐपण कला का प्रयोग किया गया था। यदि हमारी नई पीढ़ी हमारी सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने के लिए आगे आ रही है तो हमें इसका स्वागत करते हुए प्रोत्साहन देना चाहिए।

प्रस्तुति:
श्रीमती नीलम तलवाड़

गायन

लोकगीतों का नया सितारा: डोईवाला महाविद्यालय का छात्र शिवांश धीमान

संगीत की दुनिया में जब किसी युवा का नाम उभरता है, तो यह न केवल उस व्यक्ति की सफलता होती है बल्कि समाज की सांस्कृतिक धरोहर को भी एक नया जीवन मिलता है। शहीद दुर्गामल्ल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय डोईवाला के बीए प्रथम वर्ष में अध्ययनरत 17 वर्षीय छात्र शिवांश धीमान की संगीत यात्रा भी ऐसा ही एक प्रेरणादायक उदाहरण है। लोकगायक शिवांश धीमान ने अपनी सुरीली आवाज और गढ़वाली–जौनसारी गीतों के माध्यम से अपने श्रोताओं का दिल जीत लिया है। शिवांश धीमान के पिता मोहन धीमान, जो पेशे से ड्राइवर हैं और उनकी माता कोमल धीमान, जो एक गृहिणी हैं, ने अपने बेटे की संगीत में रुचि को हमेशा समर्थन दिया। शिवांश का संगीत के प्रति लगाव मात्र 14 वर्ष की आयु में शुरू हुआ जब उन्होंने अपने रिश्तेदार और जौनसारी गायक सूरज शाह से प्रेरणा ली। शिवांश का पहला गीत मायादार हारुल उनकी संगीत यात्रा का मील का पत्थर साबित हुआ, जिसे साज स्टूडियो ने प्रस्तुत किया। उनकी अब तक लगभग दस गढ़वाली और जौनसारी गीतों की एलबम आ चुकी है।शिवांश ने मंजू नौटियाल, अनिशा रांगड़, और रेशमा शाह जैसे वरिष्ठ लोक कलाकारों के साथ काम कर अपनी कला को निखारा है। आगामी दिसंबर में उनकी गढ़वाली गायिका मीना राणा के साथ प्रस्तुत गीत 'फुर्सत' भी दर्शकों के बीच आएगा। शिवांश बताते हैं कि संगीत उनके जीवन का आधार है, एक ऐसा माध्यम जिसने उनके दृष्टिकोण को सकारात्मकता से भर दिया।आज की पीढ़ी में ऐसे युवाओं का सामने आना हमारे लोक संगीत और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के लिए अत्यंत आवश्यक है। शिवांश धीमान जैसे कलाकार न केवल अपने व्यक्तिगत विकास की ओर अग्रसर हैं बल्कि वे अपनी संस्कृति को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे प्रतिभाशाली युवा को हमारा समर्थन और प्रोत्साहन न केवल उसकी कला को संजीवनी देता है, बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर को भी सजीव और समृद्ध बनाता है।शिवांश धीमान को उनके संगीत के सफर में अनेक सफलताओं की शुभकामनाएं, जो भविष्य में उन्हें एक प्रतिष्ठित लोकगायक के रूप में स्थापित करेंगी।

प्रस्तुति–अंकित तिवारी, सह सम्पादक

उत्सव

गौचर मेले का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक व व्यापारिक महत्त्व

चमोली जनपद के गौचर मैदान में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला 'गौचर मेला' लोक संस्कृति और व्यावसायिकता के समन्वय का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। वर्तमान में राजकीय मेले के रूप में स्थापित "औद्योगिक विकास एवं सांस्कृतिक मेला, गौचर" की शुरुआत एक व्यापारिक मेले के रूप में वर्ष 1943 में इसके प्रथम आयोजन से हुई थी। उस समय देश में ब्रिटिश शासन था और बाजार–व्यापार के साधन सीमित थे। सीमांत जनपद होने के कारण चमोली के काश्तकारों के सीमा–पार तिब्बत के लोगों से व्यापारिक संबंध थे और वस्तुओं का विनिमय होता रहता था। गौचर मेले के विधिवत शुरूआत से पहले भी भोटिया व्यापारी तिब्बत और सीमांत क्षेत्रों से शिलाजीत, ऊन, घोड़े, बकरियां, गर्म–वस्त्र, मसाले, जड़ी–बूटियाँ, कस्तूरी, आभूषण, इत्यादि लाकर हाट बाजार लगाकर बेचा करते थे। नीती–माणा घाटी जनजाति के प्रमुख व्यापारी बाला सिंह पाल, पान सिंह बंपाल और गोविंद सिंह राणा ने इस हाट बाजार को मेले का स्वरूप देने के लिए तत्कालीन समाजसेवी एवं पत्रकार गोविंद प्रसाद नौटियाल के नेतृत्व में प्रयास किया जो वर्ष 1943 में फलीभूत हुआ। वर्ष 1943 में भारत–तिब्बत के बीच व्यापार बढ़ाने के उद्देश्य से इस मेले के आयोजन की शुरुआत हुई जिसका उद्घाटन गढ़वाल के तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर आर. वी. वानीर्डी के द्वारा किया गया। दुर्गम क्षेत्र होने के कारण यह मेला स्थानीय काश्तकारों के लिए अपने उत्पादों को बेचने का एक माध्यम था जिसके द्वारा वे धनोपार्जन कर पाते थे। इस मेले में स्थानीय काश्तकारों के साथ–साथ तिब्बत क्षेत्र से भी व्यापारी स्थानीय उत्पाद लेकर बेचने आते थे। परंतु वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद तिब्बत से व्यापार बंद हो गया। इस युद्ध के बाद चार

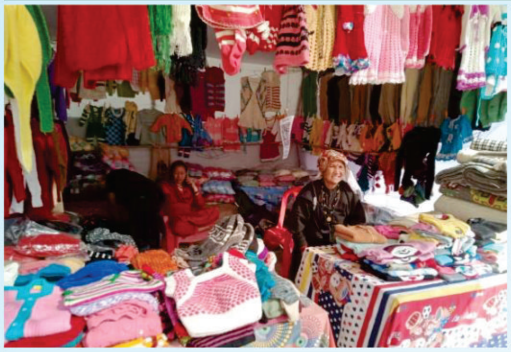

वर्षों तक गौचर मेला आयोजित नहीं हो पाया। उसके बाद तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार के पहल पर गौचर मेले का आयोजन पुनः प्रारंभ हुआ। प्रतिवर्ष 14 नवंबर से 20 नवंबर तक आयोजित होने वाला यह मेला अब तक 72 बार आयोजित किया जा चुका है। कुछ साहित्यिक साक्ष्यों के अनुसार आजादी के पहले यह मेला अलग–अलग तिथियों को आयोजित होता था परंतु स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह राष्ट्र के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू की जन्म तिथि 14 नवंबर से ही आयोजित होता रहा है। कुछ विशेष कारणों से कभी–कभी इसकी तिथि बदलनी पड़ी है। वर्ष 2018 में नगर निकाय चुनाव के कारण मेले का उद्‌घाटन नौ दिन बाद 23 नवंबर को हुआ।

मेले के आयोजन की शुरुआत से अब तक भारत–चीन युद्ध, उत्तरकाशी भूकंप, पृथक उत्तराखंड राज्य आंदोलन, कोरोना महामारी जैसे विभिन्न कारणों से दस बार मेला आयोजित नहीं हो पाया। प्रारंभ में इस मेले में भोटिया जनजाति की मुख्य भागीदारी रहती थी जो तिब्बत और सीमांत क्षेत्रों से विभिन्न वस्तुएं लाकर यहां बेचते थे और बदले में यहां से गुड़, जड़ी बूटियां इत्यादि ले जाते थे। इन कारणों से उस दौर में मेले को भोटिया मेला भी कहा जाता था। वर्ष 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद मेले के स्वरूप में व्यापक बदलाव आए जो वर्तमान तक जारी हैं। राज्य सरकारों की भागीदारी से मेले को व्यापक स्वरूप देने का प्रयास किया गया और उसमें विभिन्न आयाम जोड़े गए। इस प्रकार यह मेल विशुद्ध व्यापारिक मेले से बहुआयामी होकर व्यापारिक और सांस्कृतिक मेले में परिवर्तित हो गया । इस दौर में गौचर मेले को 'गौचर औद्योगिक एवं विकास प्रदर्शनी' बोला जाने लगा। 1960 के दशक में मेले का आयोजन जिला पंचायत करता रहा परंतु कुछ वर्षों बाद इसका आयोजन नगर निकाय के द्वारा किया जाने लगा। 1990 के दशक से मेले का आयोजन जिला प्रशासन द्वारा किया जाने लगा जो अब तक जारी है। उस समय से मेले का नाम 'गौचर औद्योगिक विकास एवं सांस्कृतिक मेला' कर दिया गया। परंतु वर्ष 2018 एवं वर्ष 2019 में मेले को 'गौचर फेस्टिवल' के रूप में आयोजित किया गया। जिलाधिकारी चमोली मेले के अध्यक्ष होते हैं और उपजिलाधिकारी को मेलाधिकारी का दायित्व दिया जाता है। जिला प्रशासन विभिन्न समितियों के माध्यम से मेले में जनप्रतिनिधियों और समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करता है। वर्तमान में आयोजित होने वाले गौचर मेले में विभिन्न स्टाल लगाए जाते हैं जिनमें ऊनी वस्त्र, खाद्य सामग्री, खिलौने, बैग, श्रृंगार के समान, इत्यादि उपलब्ध होते हैं। पहाड़ी अनाज, दालें, शहद, सब्जियां, नमक, मसाले, इत्यादि मेले में पहुंचे लोगों द्वारा खूब पसंद किए जाते हैं। साथ ही सरकार के विभिन्न विभाग और संस्थाओं जैसे मत्स्य विभाग, सहकारी कंपनियां, कृषि एवं उद्यान विभाग, इत्यादि के भी स्टाल लगाए जाते हैं। बच्चों के लिए झूले और आयोजित होने वाली खेल प्रतियोगिताएं भी गौचर मेले को खास बनाती हैं।

व्यापार के साथ–साथ गौचर मेला लोक चेतना के वाहक की भूमिका भी निभाता आ रहा है। एक सप्ताह चलने वाले इस मेले में विभिन्न लोक कलाकारों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। इस प्रकार यह मेला लोक–संस्कृति और लोक–जीवन के रंगस्थल के रूप में स्थापित है। प्राचीन काल में यह मेला दुर्गम क्षेत्रों में बसे लोगों के व्यवसाय और व्यापार के लिए मिलने का अवसर होता था। परंतु वर्तमान में यह एक अस्थाई पर्यटन केंद्र के रूप में कार्य करता है और उत्तराखंड के विभिन्न क्षेत्रों से लोग पर्यटन और मनोरंजन के उद्देश्य से मेले में पहुंचते हैं। इस प्रकार गौचर मेला एक बहुआयामी कार्यक्रम है जिसमें व्यावसायिकता, कला, मनोरंजन, प्रतिभा–प्रदर्शन, पर्यटन और लोक–संस्कृति का समन्वित रूप परिलक्षित होता है।

प्रस्तुति डॉ. इंद्रेश कुमार पाण्डेय
असिस्टेंट प्रोफेसर (वनस्पति विज्ञान),
डॉ. शिवानंद नौटियाल राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कर्णप्रयाग (चमोली)
ईमेल – pandey197@gmail.com

धार्मिक पर्यटन

आदि बद्री: चमोली जनपद में अद्भुत मंदिर समूह

आदि बद्री भगवान विष्णु का एक प्राचीन मंदिर है जो चमोली जनपद में स्थित है। स्कन्दपुराण के अनुसार भगवान विष्णु ने सृष्टि के आरम्भ में आदि बद्री में 12 वर्षों तक तपस्या की,इस तपस्या के बाद ही ब्रह्मांड की रचना हुई। आदि बद्री एक अद्भुत मंदिर समूह है जो कर्णप्रयाग से लगभग 20 किमी पर हल्द्वानी मार्ग पर मुख्य सड़क के निकट स्थित है। मूलरूप में इस मंदिर समूह में 16 मंदिर थे जिसमें से दो मंदिरों की मूर्तियां अब खंडित हो चुकी हैं, वर्तमान में यह 14 मंदिरों का समूह रह गया है। मंदिर समूह में सभी मंदिर विभिन्न देवी–देवताओं को समर्पित हैं। मंदिर प्रस्तर पर गहन और विस्तृत नक्काशी है जो यहां आने वाले श्रद्धालुओं को आकर्षित करती है। आदि बद्री मंदिर के कपाट पौष माह की संक्रांति को बंद किये जाते हैं और एक माह बाद मकर संक्रांति को खोले जाते हैं।

वर्तमान में इन मंदिरों की देखभाल भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षणाधीन है। थापली गांव के ब्राह्मण पिछले लगभग सात सौ वर्षों से इस मंदिर के पुजारी हैं।

प्रस्तुति–
डॉ. हरीश चंद्र रतूड़ी ,
विभागाध्यक्ष वाणिज्य,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
कर्णप्रयाग

स्वाद पहाड़ का

स्वास्थ्यवर्धक है गहत की दाल का फाणु

उत्तराखंड जितना खूबसूरत है उतने ही स्वादिष्ट यहां के व्यंजन। आप सभी को मेरा प्रणाम। गढ़वाली व्यंजनों की श्रृंखला में आज हम सीखेंगे गहथ दाल का फाणु जो कि बहुत ही स्वादिष्ट एवं स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। इसे कुलथ की दाल भी कहते हैं। इसमें फाइबर, कैल्शियम,आयरन इत्यादि पोषक तत्व भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं। गहथ की दाल का पानी किडनी स्टोन की समस्या के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। आइये हम शुरू करते हैं।

सामग्री –

- गहथ दाल– एक कप , कड़ी पत्ता, लहसुन– चार–पांच,
- सरसों का तेल–दो बड़े चम्मच,जख्या,जीरा, हल्दी,अदरक, नमक स्वाद अनुसार,हरा धनिया

बनाने की विधि–

सबसे पहले गहथ की दाल को साफ कर लें। रात भर भिगो दें। सुबह पानी निथार लें। गहथ की दाल को सिलबट्टे में महीन पीस लें।आप इसे मिक्सी में भी पीस सकते हैं किंतु सिलबट्टे के पिसे हुए गहथ दाल का अपना ही स्वाद होता है, साथ ही हरी मिर्च, धनिया,अदरक, लहसुन भी पीस लें। अब लोहे की कढ़ाई को आँच पर रखकर इसमें दो बड़े चम्मच सरसों के तेल डालकर गर्म करें। इसमें जख्या, जीरा का तड़का लगाएं। इसके बाद कटा हुआ प्याज भूने साथ ही कड़ी पत्ता डालें हल्दी,धनिया, नमक, पिसा हुआ अदरक, लहसुन इत्यादि सभी पिसी हुई सामग्री में मिलाकर उसमें थोड़ा पानी डालकर घोल बना लें। यदि आप चाहें तो घोल के कुछ भाग की पकौड़ी बनाकर अलग रख सकते हैं।

अब प्याज को भूरा होने पर सारे घोल को धीरे–धीरे कढ़ाई में डालकर करछी चलाते रहें जिससे घोल में गांठ न पड़े। आवश्यकता अनुसार पानी डालें जितना गाढ़ा या पतला करना हो। 7 से 10 मिनट तक पकाएं। ध्यान रहे बीच–बीच में करछी चलाते रहें। जब अच्छी तरह पक जाए तो ऊपर से हरी धनिया डालकर एवं जो पकौड़ी हमने अलग से निकाली थी उन्हें भी कढ़ाई में डाल दें। अब गरमागरम फाणु तैयार है। आप चावल अथवा झंगोरे के साथ गरमागरम स्वादिष्ट फाणु परोसें।

प्रस्तुति–
डॉ.शोभा रावत,असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजकीय महाविद्यालय कल्जीखाल,
पौड़ी गढ़वाल

कलात्मकता

अनुराग रमोला की चित्रकला में समाहित है जनजागरूकता

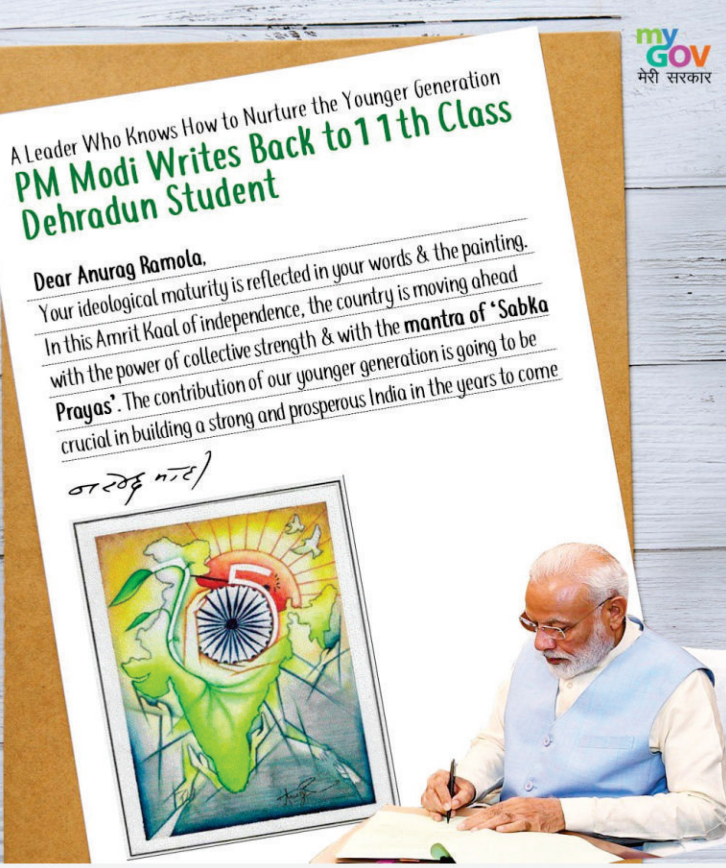

रमोलगांव तहसील प्रतापनगर, टिहरी गढ़वाल, उत्तराखंड के निवासी (हाल निवास 105 चंदर नगर, नगर निगम कॉलोनी देहरादून) अनुराग रमोला एक प्रतिभाशाली कलाकार हैं। अब तक आपने राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और राज्य/जिला स्तर पर 350 से अधिक पुरस्कार और सम्मान अपने नाम किए हैं। आपने अपने रचनात्मक कार्यों से कई कीर्तिमान अर्जित किए है एवं उनके द्वारा समाज को किशोरावस्था से ही पर्यावरण संरक्षण, संस्कृति, स्वच्छता, नशा उन्मूलन आदि जैसे सामाजिक हितों के मुद्दों को चित्रकला द्वारा दर्शाकर जागरूकता का कार्य किया हैं। अनुराग के प्रयासों से प्रभावित होकर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पत्र द्वारा अनुराग की सराहना की। अनुराग की पेटिंग को उन्होंनें नरेंद्र मोदी ऐप और narendramodi-in वेबसाइट पर भी अपलोड किया गया है।

विपरीत परिस्थितियों में लॉकडाउन के दौरान अनुराग ने 150 से अधिक पेंटिंग्स बनाई जिनको देश–विदेश के विभिन्न मंचों पर प्रतिनिधित्व करते हुए 22 अंतरराष्ट्रीय, 42 राष्ट्रीय एवं 26 राज्य/जिला अवार्ड हासिल कर यह रिकॉर्ड अपने नाम किया। कई पेंटिंग्स यूएस, फ्रांस, जापान, नई दिल्ली एवं वर्चुअल प्लेटफॉर्म पर भी जागरुकता हेतु प्रदर्शित कि गई।

वर्ष 2021 मे इन्हें कला के क्षेत्र में उत्कृष्टता के लिए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बालशक्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जो 18 वर्ष से कम उम्र के लोगों के लिए भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। 'गिनीज बुक ऑफ रिकार्ड्स', ''इंडिया बुक ऑफ रिकार्ड्स'' ''एशिया बुक ऑफ रिकार्ड्स'' द्वारा पुरस्कृत एवं नाम दर्ज कराने वाले कलाकार है। इनकी पेंटिंग प्रदर्शनी राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ स्थान पर रही जिसका अवलोकन व अनुराग द्वारा व्याख्या सुन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा खूब सराहना की गई है। उत्कर्ष जन कल्याण सेवा समिति के ब्रांड एम्बेसडर के रुप मे अनुराग ने विभिन्न मंचों पर जागरूकता कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों व कार्यशालाओं द्वारा लोगों को, मुख्यतः छात्रों और युवाओं में जागरूकता और प्रगतिशील भारत के निर्माण में जिम्मेदारी के सकारात्मक दृष्टिकोण, उत्साह एवं नवीन समाधानों से प्रभावित कर अनुकरणीय सेवा प्रदान की है। इनके द्वारा 6 माह में निर्मित भारतीय कला, संस्कृति और विरासत के संगम को आम जनमानस से जोड़ती श्री राम चित्रकला सेवा के रूप में समर्पित श्री रामलला की जीवंत पेंटिंग को स्वामी गोविन्ददेव गिरिजी महाराज कोषाध्यक्ष, श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के निरीक्षण में 26 जनों के दल सहित श्री राम

जन्मभूमि मंदिर अयोध्या में श्री रामलला के समक्ष प्रथम दर्शन कर उत्तराखंड के पौराणिक श्री ओणेश्वर महादेव मंदिर देवल, टिहरी गढ़वाल मे इनकी कला को लोकार्पित समर्पण किया गया। पहाड़ों में बढ़ते पलायन के मुद्दे पर जागरूकता लाने के लिए, योगी डॉ. बिपिन जोशी के सानिध्य में अनुराग रमोला ने 50 कलाकारों की एक टीम को तिवाड़गांव की दीवारों में उत्तराखंड की संस्कृति, संस्कारों, जैव विविधता, रीति–रिवाजों को दर्शाने वाले चित्र उकेरे व पद्मश्री डा. माधुरी बड़थ्वाल ने महिलाओं को सांस्कृतिक मांगल गीतों का प्रशिक्षण दिया।

'आजादी के अमृत महोत्सव' के दौरान अनुराग ने सामूहिकता की शक्ति को रचनात्मकता में एकता के सन्देश से जुड़ी यूनिटी इन क्रेपटिविटी संस्कृति मंत्रालय की मुहिम में 6X5 फुट की रंगोली बनाकर भारतीय संस्कृति को दर्शाते हुए नई दिल्ली में प्रथम स्थान प्राप्त किया। डाक विभाग, संचार मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रगति मैदान में अमृतपेक्स राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी में इनकी पेन्टिंग को देश की 6 लाख प्रविष्टियों में से अमृत महोत्सव के स्मारक डाक टिकट के रुप में जारी किया गया। उत्तराखंड की पारंपरिक विरासत ईगास– बग्वाल (पहाड़ी दीपावली) के संवर्धन एवं राष्ट्रीय पहचान दिलाने के

प्रयास से अनुराग रमोला द्वारा इसका जीवंत चित्रण करती पेंटिंग को माननीय राष्ट्रपति जी से लेकर उत्तराखण्ड के ग्रामवासियों व विशिष्ट जनों को प्रदर्शित किया गया। अनुराग का कहना है कि उन्हें कला से विशेष लगाव है। आगे भी वह पेंटिंग के माध्यम से जागरूकता का संदेश देते रहेंगे।

प्रस्तुतिः प्रो.(डा.)के.एल.तलवाड़

उत्तराखण्ड राज्य के 25वें स्थापना दिवस (9 नवम्बर) के शुभ अवसर पर 'साईं सृजन पटल' न्यूज लैटर के समस्त पाठकों एवं उत्तराखण्डवासियों को हार्दिक शुभकामनायें।

प्रो. (डा.) के.एल. तलवाड़
(सेवानिवृत्त प्राचार्य)

संयोजक-साईं सृजन पटल, आर.के. पुरम, जोगीवाला, देहरादून (उत्तराखण्ड), मो० 9412142822

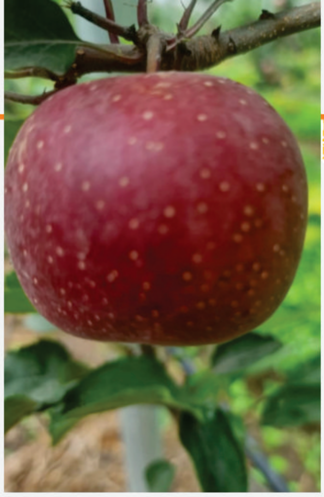

बागवानी

सेब उत्पादन बढ़ाने के लिए उच्च सघन खेती: कम ऊंचाईं वाले क्षेत्रों में सफलतम प्रयोग

सघन खेती (High Density) एक आधुनिकतम तकनीकी है जिसमें सेब की सघन खेती का प्रयोग कम भूमि पर अधिकतम सेब उत्पादन हेतु किया जाता है। आजकल परिवारों के पास कम भूमि होने के साथ भूमि परिवारों मे बंटने के कारण कम होती जा रही है। जिससे उत्पादन प्रति व्यक्ति कम होता जा रहा है। इस तकनीकी में कम से कम क्षेत्रफल में फल वृक्षों की संख्या बढ़ाना ताकि हमें अधिक फल मिल सकें। इस तकनीकी में फल का आकार एक समान व एक साथ परिपक्व होने के कारण वृक्ष का कुल उत्पादित क्षेत्र बढ़ जाता है और प्राकृतिक संसाधनों का भी अधिकतम प्रयोग होता है, जैसे धूप, जमीन, पानी आदि, जो कि प्रति इकाई क्षेत्र उपज बढ़ाने में सहायक होते हैं। छोटे वृक्ष होने के कारण उत्पादित समय भी घट जाता है, जिससे पौधे उत्पादन जल्दी देना आरंभ कर देते हैं। पौधों का आकार छोटा होने के कारण कटाई–छंटाई, तुड़ाई के साथ–साथ प्रूनिंग आदि करना भी आसान होता है, जिससे फल उत्पादन का खर्चा घट जाता है।

यहाँ पर यह सबसे अधिक समस्या फल का असामान्य आकार के साथ एक साथ परिपक्व न होना है जिससे कि सेब को सही दाम नहीं मिल पाता है। जहां पूर्व मे यहाँ कृषक 120 पौध प्रति एकड़ लगाते आ रहे हैं वही इस तकनीकी से 400 पेड़ तक लगा रहे हैं। सेब की सघन खेती का मतलब है, गुणवत्ता को कम किए बिना प्रति इकाई ज्यादा सेब का उत्पादन करना।

उत्तराखंड में सेब की सघन खेती के लिए नई नीति बनाई गई है। इस नीति के मुताबिक, आठ साल में राज्य में पांच हजार हेक्टेयर में सेब की सघन खेती की जाएगी। सेब बागान लगाने वाले किसानों को 80 प्रतिशत सब्सिडी दी जा रही है।

उद्यान विभाग के तहत "सेब की अति सघन बागवानी योजना" के अंतर्गत राज्य सरकार 60 प्रतिशत का अनुदान प्रदान कर रही है। इस योजना का उद्देश्य राज्य में सेब उत्पादन को बढ़ावा देना और किसानों की आय में वृद्धि करना है। इस योजना के तहत, न्यूनतम 2 नाली भूमि और अधिकतम 100 नाली भूमि पर सेब की नवीनतम प्रजातियों के बागान स्थापित करने वाले किसान इस अनुदान के पात्र होंगे।

इसके अलावा, योजना के लाभार्थियों का चयन "पहले आओ, पहले पाओ" के आधार पर किया जाएगा। यह सुनिश्चित करने के लिए कि अधिक से अधिक किसान इस योजना का लाभ उठा सकें, सरकार ने आवश्यक भूमि की सीमा निर्धारित की है। इस तकनीकी से उत्तरकाशी जनपद के 1000, मीटर तक की ऊंचाई पर भी सेब का उत्पादन किया जा रहा है व इस तकनीकी से लगभग 600 परिवारों ने अपना सेब का बागीचा लगाया गया व अभी भी नए किसान कार्य कर रहे है 'कृषक इस विधि से पूर्व में बिलकुल अनजान थे परन्तु एक्सपोजर विजिट, फील्ड प्रदर्शन आदि से किसानो में आत्मविश्वास बढ़ा है ।

प्रस्तुति:
डॉ. महेंद्र पाल सिंह परमार
विभागाध्यक्ष, वनस्पति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
उत्तरकाशी

उपलब्धि

प्रो.(डा.) मधु थपलियाल को नई दिल्ली में 5वें विश्व पर्यावरण शिखर सम्मेलन 2024 में मिला महिला सशक्तिकरण पुरस्कार

पर्यावरणविद्, सामाजिक वैज्ञानिक, समर्पित शिक्षक और अनुसंधानकर्ता प्रोफेसर मधु थपलियाल को नई दिल्ली में 5वें पर्यावरण शिखर सम्मेलन (16–18 नवंबर)के दौरान महिला सशक्तिकरण पुरस्कार प्राप्त हुआ। शिखर सम्मेलन का आयोजन डॉ. भीमराव अम्बेडकर कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, पर्यावरण और सामाजिक विकास संघ (ईएसडीए), नई दिल्ली, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। डॉ. मधु थपलियाल ग्रामीण क्षेत्र में महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं और उन्हें सशक्त उद्यमी बना रही हैं, ग्रामीण विकास में अपने शिक्षण और अनुसंधान के साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण में भी मदद कर रही हैं। प्रो. मधु थपलियाल को पहले भी विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है, जो उन्होंने अपने काम के प्रति असाधारण समर्पण के कारण मिले हैं।

महिला सशक्तिकरण पुरस्कार उन्हें मुख्य अतिथि – इलाहाबाद उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश और भारत सरकार के राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण (नेशनल ग्रीन ट्राईब्यूनल) के वर्तमान सदस्य न्यायमूर्ति सुधीर अग्रवाल, मत्स्य पालन और महासागर संसाधन राज्य मंत्री डॉ. अमजत अहमद – मालदीव गणराज्य, प्रो. (डॉ.) एम.के. वाजपेयी, माननीय चांसलर, अंतर्राष्ट्रीय रोमा सांस्कृतिक विश्वविद्यालय, मेजर जनरल डॉ. श्री पाल, वीएसएम (सेवानिवृत्त), अध्यक्ष पर्यावरण एवं सामाजिक विकास संघ (ईएसडीए), दिल्ली और प्रो. राज कुमार, निदेशक, वल्लभभाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा प्रदान किया गया । ग्रामीण विकास, महिला किसानों को उद्यमियों में बदलने, देशी हल्दी की खेती के लिए गांवों का समूह बनाने, स्थानीय स्तर पर उत्पादों को विकसित करने में किए गए उनके काम को कार्यक्रम के दौरान सराहा गया। प्रो. मधु थपलियाल का पर्यावरण संरक्षण में भी विशेष योगदान रहता है, उनके द्वारा उत्तरकाशी जंतु विज्ञान के छात्र–छात्राओं के साथ डोडीताल में प्लास्टिक को एकत्रित कर विभाग में वर्टिकल गार्डन तैयार किया गया। इसके साथ ही प्रो. मधु थपलियाल की अगुआई में देहरादून में स्थित गौरा दैवी जैवविविधता तालाब के संरक्षण में मुख्य भूमिका निभाई व वेटलैंड कंजरवेशन की और सरकार का ध्यान आकर्षण किया। इस उपलब्धि पर प्रो मधु थपलियाल को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो पंकज पंत, प्राध्यापकगण, छात्र छात्राओं, व क्षेत्र वासियों ने बधाई दी।

प्रो. थपलियाल, वर्तमान में आर. सी. यू. गवर्नमेंट पीजी कॉलेज उत्तरकाशी में कार्यरत हैं और इस दूरस्थ स्थान में उनका काम सतत विकास लक्ष्यों (एस. डी.जी.) के कार्यान्वयन के साथ जुड़ा हुआ है, वोकल फॉर लोकल मिशन के तहत स्थानीय स्तर पर नौकरियां पैदा करेगा और स्थायी स्थानीय अर्थव्यवस्था के सतत विकास में मदद करेगा ।

प्रस्तुतिः प्रो.(डा.)के.एल.तलवाड़

संपादक/स्वामी प्रो० (डॉ०) के०एल० तलवाड़ (सेवा निवृत्त प्राचार्य) एवं सह सम्पादक श्री अंकित तिवारी (मो.न.7678117638) द्वारा ईजी ग्राफिक्स, दया पैलेस, हरिद्वार रोड, देहरादून से मुद्रित करवाकर 'सांई कुटीर' आर.के. पुरम, जोगीवाला, देहरादून से प्रकाशित। मो.नं. 9412142822, ई-मेलः mekltalwar@gmail.com